# शांति के लिए जरूरी है भावात्मक विकास : आचार्य महाश्रमण

## *अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का का दुसरा दिन*

**सरदारशहर 27 सितज़्बर, 2010**

आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के दूसरे दिन जीवन विज्ञान दिवस पर कहा कि जीवन विज्ञान भावात्मक विकास की शिक्षा है। भावात्मक विकास के अभाव में शांति प्राप्त नहीं हो सकती है। शांति और सुख का आधार है भावशुद्धि। उन्होंने कहा कि बौद्धिक विकास अच्छा है। समाधान बुद्धि से होता है। शुद्ध बुद्धि कामधेनु के समान है। अशुद्ध बुद्धि समस्या उत्पन्न करने वाली होती है, जीवन विज्ञान बुद्धि के साथ शुद्धि की उपयोगिता पर ध्यान खिंचता हैं। उन्होंने जीवन विज्ञान को प्रेक्षाध्यान और अणुव्रत का मिलाजुला रूप बताया।

जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान के द्वारा आनन्दपूर्ण जीवन जीने का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त होता है। कार्यक्रम के मुज़्य वक्ता ओ.पी. बोहरा, बजरंग जैन ने अपने विचार रखे। मुनि नीरजकुमार ने मंगलाचरण किया। मुज़्य अतिथियों का अणुव्रत समिति की तरफ से साहित्य भेंट कर सज़्मान किया गया। संचालन संतपराम सुराणा ने किया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा उदयपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'उदयपुर तेरापंथ सज़्पर्क' संपादक सुबोध दुगड़ ने आचार्यश्री महाश्रमण को विमोचन हेतु भेंट की। इस अवसर पर 'आत्मरस' कृति का भी विमोचन किया गया।

ज्ञातव्य है कि अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का प्रथम दिन पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया गया था। जिसमें आचार्य महाश्रमण ने पानी के दुरुपयोग न करने की प्रेरणा देते हुए नैतिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास को अन्य विकासों के साथ जरूरी बताया। उन्होंने पर्यावरण शुद्धि के लिए पोलीथिन थैली के प्रयोग से बचना भी आवश्यक बताया। इस मौके पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मुज़्य वक्ता बीकानेर से समागत डॉ.एम.जी. बुडानिया, लिछुराम पुनिया ने संबोधित किया। समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी ने स्वागत भाषण दिया। महिला मण्डल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। आभार मंत्री मनीष पटावरी ने किया। अतिथियों का सज़्मान चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती राजूदेवी चौहान ने किया ।

# पंजाब से उमड़े श्रद्धालु

सरदारशहर आचार्यश्री महाश्रमण के पंजाब पधारने की अर्ज लेकर रविवार (26 सितज़्बर) को पंजाब राज्य के अलग-अलग 37 क्षेत्रों से लगभग पंद्रह सौ व्यक्ति उपस्थित हुए, उन्होंने सरदारशहर पहुंचकर शहर में जुलूस निकाला 'गुरुदेव पंजाब पधारो' के नारे लगाते हुए तेरापंथ भवन पहुंचे। आचार्यश्री महाश्रमण से 2013-14 के चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव की पूरजोर अर्ज करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त की।

**शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)